– उप संहार –

उपसंहार

डॉ. शिवप्रसाद सिंहजीपचासोत्तर हिन्दी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर और बहुमुखी प्रतिभाके धनी साहित्यकार है। उन्होंने अपने साहित्य में ग्रामीन जीवन को व्यापक रूपमें उठानेका प्रयास किया है। साथ ही ग्रामीण जीवन से भागकर नगर में प्रवेश करनेवाले युबकों के सामने आनेवाले ग्रामीन तथा नागरी समस्याओंका सच्चा चित्र प्रस्तुत करने के लिए अपनी लेखनी चलाई है।

स्वाधीनता के बाद के उपन्यास के क्षेत्र में उपेक्षित, अदेख, अकुलीन, दलित और पिछडे लोगोंके संवदेनीय चित्रण से नयी-नयी कथा भूमियोके अन्वेषण से तथा मूल भारतीय आत्मीकी कथागतह पकड से उन्होंने आधुनिक साहित्यमें अपना एक विशिष्ठ स्थान निर्माण किया है। इस दौर में " नयी कहानी" की शृंखान में ग्राम जीवन अथवा भारतीय कृषक जीवन को लेकर शिवप्रसाद सिंहजी की प्रथम कहानी "दादी माँ" शीर्षक से शुरू होती है जो अक्तुबर १९५१ में. प्रतीक मे प्रकाशित हुई थी। उसके बाद उन्होंने ग्रामीन जीवन को आधार बनाकर अनेक काहानियाँ लिखी जो सात कहानी संग्रहोमें प्रसिध्द है। इस दौर में आंचलिक कहानीकार कहकर उनके ऊपर अनेक आलोचकोंने आलोचनाए की उन सभी आलोचना ओंको ठुकराकर उन्होंने आंचलिकतासे रहित आधुनिक की चुनौतीको नये बदलते ग्राम जीवन अथवा आधुनिक ग्रामबोधके दस्तपर उपन्यास लिखना शुरू किया और अपने उपन्यास के जरीए उन्होंने अपने उपर लगाए आरोपोंको नकली बहा बाजी कहकर ग्रामबोध और नगरबोध के ऊपर लेखनी चलाकर अपने उपन्यास और कहानी लेखक से आधुनिक हिन्दी कहानी और उपन्यास साहित्य को उजागर किया है।

सिंहजीका जन्म सम्भ्रांत मध्यमवर्गीय कृषक परिवार में हुआ था। पिताजी किसान थे। उनके परिवार की आर्थीक एवं सामाजिक स्थिती अच्छी होने के कारण शिवप्रसादजी को अपने प्रारंभिक जीवनमें किसी बडी कठिनाइयोंका सामना नहीं करना पडा लेकिन

संयुक्त परिवार के टूटनेके बाद शिक्षामें निरंतर आर्थिक बाधामें आती रही इनूर से एम. ए. तक कई बार पढाई छूटने छुटते बची लेकिन प्रारंभसेही कुशाग्र बुध्दिके कारण अनेक बाधाएँ आनेके बाद भी आखरी समयतक अध्ययन में बडी रुचि लेकर पढाई पूरी की। सिंहजीका व्यक्तित्व गुरू गम्भीर स्वभाव के कारण हर वक्त अन्तर्मुखी रहते थे इसीलिए शायद उनके बाह्य व्यक्तित्व के उपर सादगी कीछाप है लेकिन किसी अमीरी अथवा प्रदर्शन की बू दिखाई नही देती।

सिंहजीके व्यक्तित्व को बनानेमें उनके पिताजी और दादाजी से ज्यादा माताजीका योगदान था। माताजीके प्रशान्त सांस्कृतिक ग्रामणारी का तथा स्नेहशील ममता और संस्कार के प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर था इसी कारण उनपर अच्छे संस्कार हुए थे इसीसे वे अपने जीवनमें आयी अनेक कठिन परिस्थितीयोंका अत्यंत सहजतासे सामना कर सके।

इस अध्याय में व्यक्तित्व के साथ सिंहजीके कृतित्व का भी संक्षेप में विवरण किया है। सिंहजी पयासोलर हिंन्दी गद्य साहित्य के एक सशक्त एवं जाने माने कलाकार थे। उन्होने विविध प्रकार का साहित्य लिखकर हिन्दी गद्य साहित्य में. महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होने अपने सृजनात्मक साहित्यमें उपन्यास कहानी, नाटक, निबंध जीवनी जैसी बहुसंख्य कृतियाँ उपलब्ध है साथ ही शोध समिक्षक, ललित निंबध संकलक, सम्पादक और आलोचक के रूप में भी अनेक रचनाएं उपलब्ध होती है। सिंहजीके प्रतिनिधीक कृतियों " अन्धकूप" और " एक यात्रा सतह के नीचे" यह दो कहानी संग्रह प्रसिध्द है जिन में " आरपार की माला "कर्मनाशा की हार" " इन्हे नी इन्तजार है" " मुरदा स्तराय" "भेडिए" "अन्धेरा" हंसता है" और "मेरी प्रिय कहानियाँ" आदि कहानी संग्रह इन दो प्रमुख कहानी संग्रहोमें विभाजित किए है। औपन्यासिक कृतियोमे अलग अलग वैतरणी "गली आगे मुडती है " " नीला चांद" "मंजुशिमा" "शैलूष" औरत "दिल्ली दूर है " और "कुहरे में" युध्द " आदि महत्वपूर्ण कृतियाँ है। उनकी प्रमुख नाट्य कृतिमें "घाटिया

गंजूती है" का उल्लेख किया जाता है और यही उनकी महत्वपूर्ण सृजनात्मक रचना एँ है।

सिंहजीकी प्रथम उपन्यास "अलग अलग वैतरणी" है सिंहजीने इस उपन्यास में करैता गाँव के माध्यमसे समस्त भारतीय गाँवोंकी यथार्थवादी चित्रण किया है। ग्रामात्मा की खोज के रूपमें पहचानी जानेवाली इस कृति की कहानी एक गाँव की कहानी या एक व्यक्ति की कहानी न होकर समस्त भारतीय गाँवोंकी और गाँक में. रहने वाले समस्त छह दर्जनो परिवारों की यह काहानी है। जिसे आलोचकोने आंचलिक कहानी की उपमा दी है। इसलिए सिंहजीने फिर एक बार यथार्थता का सहारा लेकर ग्रामजीवनसे बाहर आकर भारत का प्राचीन नगर काशीकी बदलती संस्कृती और युवा आक्रोश का सहारा लेकर अपने ऊपर लगाए आंचालिकता के धब्बे को निकाल दिया और उसी ग्रामांचा और पुरानी ऐतिहासिक सांस्कृतिक कबिलाई कहानियोंका सहारा लेकर अपने उपन्यासो में उल्लखित चरित्रोंके माध्यमसे अपने ही मनकी आपबीती का उद्घाटन कर रहे है। या यों कहिए अपनी आपबीती सुना रहे है। और यह आपबीती अलग अलग वैतरणी से ले कर " कहरे में युध्द " तक अबाधगति से चल रही है। जिसने आज सिंहजीको पचासोलकर हिन्दी साहित्य केसशक्त हस्ताक्षर और बहुमुखी प्रतिभाके धनी साहित्यकार के रूपये पथ का दावेदार बना दिया है। मगर फिर भी उनकी लेंखनी अबाध गति से चल रही है।

शिवप्रसाद सिंह चरित्र चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यासकार हैं। यद्यापि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के आंतर-बाहय व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पुरी सफलता पायी है।

"अलग अलग वैतरणी" तोमहान चरित्रों का विराट अलबम है साथ ही इस अलबम में आए हर एक पात्र की अपनी अद्वितीयता यहाँ सिध्द हु होती है। लेंकिन फिर भी करैता की की उनक को पाठकोंके सामने रखनेका प्रमुख उद्देश्य

इस उपन्यास का होने के कारण उपन्यास के सभी चरित्र उद्देश्योन्मुख है। इन पात्रो के जरीए सिंहजी गाँव की एक एक प्रवृत्ति मे एक एक रूप को प्रतिकित किया है। साथ ही सिंहजी कथा कहनेमें सिध्द हस्त होने के कारण पाठक को यह पता नाही चलता की चरित्रों मे आनेवाला असहज मोड कब और कैसे आता है। लेकिन फिर भी सिंहजीके पात्रोंकी सृति तयशुदा प्रवृतियो का प्रच्छन्न प्रमाण जरूर देती है। कनिया, जग्गन, देबू, शशिकांत, सत्यभगत खलील खाँ, आदि भलेमानुस पात्र है। ये प्राय गलती नही करते। मुलत: इनका सृजन अच्छी प्रवृतिवाले पात्रों के रुप में किया गया है। दुसरी तरफ सुरजू हरिया, सिरिया छबिल्वा, जगेसर बुझारथ संगनी आदि पात्र हर जगह प्राय: दृष्ट कार्य ही करते है। यह श्रेणी बध्दता मनुष्य को खानों मे. बाँट देती है। जैपाल दोनों के मिश्रीत रूप है।

अलग अलग वैतरणी महान चरित्रोंका विराट अल्बम होने के कारण जीवंत चरित्रों की सृष्टी हो गयी है। उपन्यास में चित्रीत सभी पात्र चाहे छोटी भूमिका में हो या बडी अपने अपने ढंग से जरुरत के मुताबिक उभर आए है। लेंकिन जितना आत्मबल और सुदृढ व्यक्तित्व करानी पीढी के लोगो में है उतना नयी पीढी के लोगो में नही है इसलिए ऐसा लगता है कि पुरानी पीढी के मुकाबले नयी पीढी के पात्र दबे जरूर है। साथ ही पुरूष पात्रों के मुकाबले नारी पात्र प्रबल सशक्त नाही हो पाये है। लेकिन फिर भी पुरी संवेदना सभी के साथ हुँ है।

इस उपन्यासमें चित्रित चरित्र आज की वास्तविक जिन्दगी के प्रतिनिधीहै जो जीवन्त यथार्थ, आकर्षक, उपेक्षित, बडे-छोटे, अच्छे-बुरे दुर्बल सबाल आदि सभी प्रकारेके चरित्रों की भरमार है। और इनके जरिए उपन्यासकार समसामायिक जीवन को तन्मयता और तटस्थता से चित्रित किया है इसलिए वास्तव में कहा जाएगा की यह चरित्र सृष्टि सर्वथा मौलिक और अद्वितीय है।

सिंहजीने इस उपन्यास में प्रेमचंदजीकी लेखनी ने गाँव के जिस उपेक्षित अंश को अपना संवेदनात्मक संस्पर्श नही दे सके उन्ही तमाम जन आंदोलनो, उपेक्षित दलित मानव समाज के दु:ख दर्द के प्रति गहरी आस्था एवं सहानुभूति रखकर समाज के नामपर यानेवाले पाखण्ड व्यवहार अडंबर और स्वार्थी प्रवृत्तियोंका पर्दा फाश किया है।

सिंहजीने अपने इस उपन्यासमें सामाजिक टूटनकी समस्या, राजनीतिक, शैक्षणिक, आर्थिक यौग तथा अनैतिक और शोषण की समस्या और को बडी आस्था से चित्रित किया है।

कथावस्तु के अंतर्गत इस उपन्यास की कथा को सार रूप में देते हुए कथावस्तु के विविध गुणोंपर भी विचार किया है। कथानक में सुसंगलन का महत्व, कथानक में मौलिकता, कथानक में रोचकता आदि के बारेमें संक्षिप्त रूप में लिखा है। कथानक के विकास में सुसंगलन, मौलिकता, रोचकता आदि गुण किस तरह सहायक होते है और इन्ही सभी गुणों के मिलाप के कारण उपन्यासकी कथावस्तु प्रभावशाली बन जाती है।

पात्र और चरित्र चित्रण के अंतर्गत उपन्यास के प्रमुख पात्र उनकी विशेषताएं उनकी वेश भूषा रहन-सहन, तथा पात्रों के रूप को प्रकट किया है। सिंह जी के सभी पात्र हांडमांस के है। मानवीय सबलता तथा दुर्बलता उनमें पायी जाती है। उनके सभी पात्र हमारे चारो ओर के परिवेश में पाये जाते है। इन्ही पात्रों का चरित्र चित्रण सिंहजीने यथार्थ की भावभूति पर किया है। इनके पास समाज के मुख्य अंग होते हुए भी व्यक्ति प्रधान है। प्रत्येक पात्र अपने आप में महत्व पूर्ण है।

उपन्यास में यदि कथानक को प्राण कहाँ गया है तो उसी में सजीवना लगे का काम कथोपकथन अथवा संवाद के द्वारा होता है। पात्रो के चरित्र चित्रण में कथोपकथन का अपना विशेष स्थान है उपन्यास के पात्र यथार्थ जीवन से लिए जाते है और उनकी बोल्याल की भाषा को भी जीवन से संबंधीत किया गया है। पात्रों के कथोपकथन स्वाभाविक एवं प्रभावशक्ति हो और साथ ही साथ पाठकों के हृदयपर अपनी छाप छोड गए है।

उपन्यास के विकास में भाषा काभी अपना विशेष महत्व है उपन्यास की भाषा कथा काल और पात्रों के अनुरूप ही होनी चाहिए उच्च शिक्षित पात्र और देहाती की भाषा में पर्याप्त अन्तर होता है। सिंह जी की भाषा भी इसी के अनुकूल ही है। अनेक उपन्यास में भोजपूरी हिन्दी, आंचलिक, खडीबोली और अंग्रेजी भाषा का प्रयोग पाया जाता है। सिंहजी को भाषा के प्रयोग में विशेष सफलता मिली है। भाषा के साथ साथ शैली का भी अपना महत्व है। सिंहजीने अपने अलग अलग वैतरणी उपन्यासमें वर्णनात्मक शैली पूर्वदीप्ति [फ्लैशबैक] वार्तालाप, प्रतीकात्मक और पत्रात्मक आदि शलियोमे लिखा यह उपन्यास अद्वितीय बन गया है।

कोई भी लेखक अपने युग तथा परिवेश से अलग नहीं हो सकता। उसके कृति में देशकाल बातावरण का चित्र अवश्य ही सफलता है। प्रस्तुत उपन्यास में स्वतंत्रता के बाद करैता गाँव की और गाँव के दर्जनो परिवारो तथा वहाँ का वातावरण इस उपन्यास पर छा गया है। लेखकने पूरे परिवेश का चित्रण यथार्थ रूप मे किया है।

लेखक का कृति निर्माण के पीछे अवश्यही कुछ न कुछ उद्देश रहता है। बिना उद्देश के वह लेखनी उठा नही सकता। स्वाधीनता के पूर्व भारत के ग्रामों में जमीदारी व्यवस्था के कारण अनघ्द अन्याय, अत्याचार, और शोषण का दौर था। लोगोने सोचा था कि स्वाधीनता के बाद यह सब खत्म होगा और खुशहाली आएगी। लेकिल नई व्यवस्था में अन्याय अत्याचार और शोषण का सिलसिला नए और उग्र रूप मे प्रकट हुआ, जिससे त्राण पाना गरीब जनता के लिए संभवनीय नही रहा। लेखक ने "करता" गाँव की इस कहानी द्वारा भारतीय जीवन के इसी त्रासद सत्य को

प्रतीकात्मक रूप में उजागर किया है।